सकती है।

मकर संक्रान्ति उत्तरायण के प्रारम्भ का अर्थात् उग्र शीत ऋतु का उत्सव है। अतः इस दिन ऋतुचर्या की दृष्टि से शीत ऋतु के अनुकूल वस्तुओं के सेवन और दान का विधान किया गया है। तिल के लड्डुओं का दान, तैल से अभ्यंग (मालिश), ऊनी वस्त्रों का दान इस दिन के धार्मिक कृत्य माने जाते हैं। साल भर का प्रमुख उत्सव होने के कारण प्रत्येक संक्रान्ति के लिए एक वस्तु का दान करने की दृष्टि से इस दिन तेरह पदार्थों का एक साथ दान किया जाता है (बारह मास और एक अधिक मास को जोड़ कर)। दक्षिण भारत ऐयप्पन का पूजक होने के नाते सूर्य का आराधक है। वहाँ पोंगल उत्सव के रूप में इस दिन खिचड़ी का सेवन, दान आदि धार्मिक विधान के रूप में घर घर में होते देखे जा सकते है। पोंगल का शब्दार्थ ही है %उफान%। इस दिन खीर या खिचड़ी पकाई जाती है और उसके उफान को समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह अन्न सूर्य को प्रिय है, शीत ऋतु में हितकर है। सारे देश में सूर्य को अर्घ्य दोनो मकर संक्रान्ति का प्रमुख कृत्य है।

इस दिन त्रिवेणी संगम का और गंगा-सागर संगम का स्नान पुण्यदायक माना जाता है। यह सूर्य के अर्थात् गर्म दिनों के (अग्नि तत्व के) आगमन का प्रतीक पर्व है अतः शीत की समाप्ति और वसन्त की प्रतीक्षा की खुशियाँ इसी दिन से मनाई जाने लगती है। जयपुर में यह दिन पतंग उड़ाने के लिए अपनी अलग पहचान बना चुका है। जयपुर राज्य के अधिकृत प्रतीक चिन्हों में 'यतो धर्मस्ततो जयः' शब्द और जयपुर राजाओं के सूर्यवंशी होने के कारण लोगों के मध्य में सूर्य अंकित है। इसलिए यहाँ मकर संक्रान्ति से लेकर माघ शुक्ल सप्तमी तक (जिसे सूर्य सप्तमी कहा जाता है) सूर्य की पूजा के उत्सव ही मनाये जाते हैं। युग बदलने के साथ अब तो उत्सवों का स्वरूप भी बदल रहा है। वह युग विस्मृत-सा हो चला है जब यह देश कोणार्क जैसे विशाल सूर्य मन्दिरों पर गर्व करता था। राजस्थान में भी झालरापाटन (जिला झालावाड़) के एक विशाल सूर्य मन्दिर का खंडहर प्राचीन गरिमा के भूले इतिहास को छिपाये बैठा है। मकर संक्रान्ति जैसे पर्व उसी इतिहास के अमर साक्षी हैं।

श्री दादू अनुभव वाणी

प्रस्तोता
डॉ. दयाराम स्वामी

जलती बलती आतमा,
साधु सरोवर जाय।
दादू पीवै राम रस,
सुख में रहै समाय।।

दुख दरिया संसार है,
सुख का सागर राम।
सुख सागर चलि जाइये,
दादू तजि बेकाम।।

राम नाम निज औषधी,
काटे कोटि विकार।
विषम व्याधि तैं ऊबरै,
काया कंचन सार।।